क्या आप एक आत्मिक पिता के स्तर तक पहुँच चुके हैं?

यूहन्ना का पहला पत्र तीन प्रकार के लोगों को संबोधित करता है: बच्चों, जवानों और पिताओं को। ये शारीरिक बच्चे, जवान या पिता नहीं हैं, बल्कि आत्मिक अवस्थाएँ हैं — आत्मिक बच्चे, आत्मिक जवान और आत्मिक पिता।

1 यूहन्ना 2:12–14 (हिंदी बाइबल – स्वीकृत अनुवाद)
12 हे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि उसके नाम
के कारण तुम्हारे पाप क्षमा किए गए हैं।
13 हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ क्योंकि तुमने
उसे जाना है जो आदि से है।
हे जवानों, मैं तुम्हें लिखता हूँ क्योंकि तुमने उस दुष्ट को जीत लिया है।
14 हे बच्चो, मैंने तुम्हें लिखा क्योंकि तुमने पिता को जाना है।
हे पिताओ, मैंने तुम्हें लिखा क्योंकि तुमने उसे जाना है जो आदि से है।
हे जवानों, मैंने तुम्हें लिखा क्योंकि तुम बलवन्त हो और परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है और तुमने दुष्ट को जीत लिया है।

हर समूह की पहचान कुछ विशिष्ट विशेषताओं से होती है।

क्या आप एक आत्मिक पिता के स्तर तक पहुँच चुके हैं?

आत्मिक बच्चे

आत्मिक बच्चों के बारे में यूहन्ना कहता है कि उनके पाप क्षमा किए गए हैं और उन्होंने पिता को जाना है। इसका क्या अर्थ है?

जब कोई व्यक्ति विश्वास में नया होता है, तो वह सबसे पहले बोझ हटते हुए महसूस करता है — पाप का भारी दबाव जो उसे पहले सताता था, वह उतर जाता है। उसके भीतर हल्कापन आता है, आज़ादी मिलती है, शांति का अनुभव होता है जिसे शब्दों में समझाना कठिन होता है। वह एक अनोखे ढंग से प्रेम का अनुभव करता है।
इसीलिए यूहन्ना कहता है:
“तुम बच्चे हो क्योंकि तुम्हारे पाप क्षमा किए गए हैं और तुमने पिता को जाना है।”
ये दो अनुभव आत्मिक जीवन की शुरुआती अवस्था को चिन्हित करते हैं।

आत्मिक जवान

जवानों के बारे में यूहन्ना कहता है:
“तुम बलवन्त हो… परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है… और तुमने दुष्ट को जीत लिया है।”

क्या आप एक आत्मिक पिता के स्तर तक पहुँच चुके हैं?

यह अवस्था आत्मिक बढ़ोतरी का प्रतीक है। यहाँ विश्वासी तीव्र परीक्षाओं, शैतानी हमलों, आत्मिक लड़ाइयों और मसीह के कारण विरोध का सामना करता है।
ऐसी अवस्था वाला व्यक्ति आत्मिक रूप से जवान कहलाता है क्योंकि चारों ओर से दबाव होने पर भी वह परमेश्वर को नहीं छोड़ता। उसका प्रार्थना-जीवन जीवित रहता है, वचन का अध्ययन कम नहीं होता, और बीमारी या कठिनाई में भी वह परमेश्वर से मुँह नहीं मोड़ता। क्यों?
क्योंकि इस समय परमेश्वर की सामर्थ उसके भीतर सामर्थी रूप से कार्य करती है, जिससे वह दुष्ट पर विजय पाता है।

आत्मिक पिता

परन्तु आत्मिक पिताओं को अलग प्रकार से वर्णित किया गया है: “तुमने उसे जाना है जो आदि से है।”

इसका क्या अर्थ है?
यूहन्ना यह क्यों नहीं कहता: “क्योंकि तुमने बहुत प्रचार किया है” या “क्योंकि तुम बहुत समय से मसीह में बने हुए हो”?

क्या आप एक आत्मिक पिता के स्तर तक पहुँच चुके हैं?

वह ज़ोर देता है:
“क्योंकि तुमने उसे जाना है जो आदि से है।”

परमेश्वर को “दूर से — आदि से” जानना गहरी आत्मिक परिपक्वता का चिन्ह है।
प्रेरितों को भी आत्मिक पिता कहा गया क्योंकि उन्हें परमेश्वर को आदि से देखने का अनुग्रह मिला था — जिस प्रकार शास्त्री और याजक नहीं देख सके।

इसी कारण यह पत्र इस प्रकार आरम्भ होता है:

1 यूहन्ना 1:1
“जो आदि से था, जिसे हमने सुना, जिसे अपनी आँखों से देखा,
जिसे हमने ध्यान से देखा और जिसे अपने हाथों से छुआ…”

यह तब पूरा हुआ जब यीशु ने उन्हें समझाना प्रारम्भ किया कि उसके विषय में व्यवस्था, भजन और भविष्यद्वक्ताओं में क्या-क्या लिखा था — कैसे वह जंगल में इस्राएल के साथ चट्टान, मन्ना और पीतल के साँप के माध्यम से उपस्थित था; कैसे वह अब्राहम के सामने मल्कीसेदेक के रूप में प्रकट हुआ; और कैसे उसने विभिन्न

क्या आप एक आत्मिक पिता के स्तर तक पहुँच चुके हैं?

चिन्हों के द्वारा स्वयं को प्रकट किया।
परन्तु इस प्रकाशन से पहले वे समझ नहीं पाए थे।

लूका 24:44–45
44 तब उसने उनसे कहा, “ये वे बातें हैं जो मैंने तुमसे कही
थीं… कि मेरे विषय में व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और भजनों
में जो कुछ लिखा है, वह सब पूरा होना आवश्यक है।”
45 तब उसने उनका मन खोल दिया ताकि वे पवित्रशास्त्र को समझ सकें।

जब कोई व्यक्ति इस प्रकार से परमेश्वर को देखता है, तब परमेश्वर उसके लिए केवल घटनाओं का परमेश्वर नहीं रहता — वह समय भर का परमेश्वर हो जाता है।
एक आत्मिक बच्चा आज की घटनाओं में ही परमेश्वर को देखता है। एक आत्मिक पिता उसे बीते कल, आज और सदैव देखता है।

तीन क्षेत्र जहाँ तुम्हारी आँखें

क्या आप एक आत्मिक पिता के स्तर तक पहुँच चुके हैं?

खुलनी आवश्यक हैं ताकि तुम परमेश्वर

को “आदि से” जान सको

1. पवित्रशास्त्र

आत्मिक पिता बनने के लिए तुम्हें मसीह को सृष्टि के आरम्भ से देखना सीखना होगा — ठीक वैसे जैसे उसने प्रेरितों को सिखाया।

2. तुम्हारा जीवन-वृत्तांत

तुम्हें अपने जीवन की शुरुआत से ही परमेश्वर के हाथ को पहचानना होगा — यहाँ तक कि अपने जन्म और बचपन तक।

दाऊद इस्राएल का चरवाहा इसलिए बना क्योंकि उसने परमेश्वर के हाथ को तब भी पहचाना जब वह भेड़ों को चरा रहा था और जब परमेश्वर ने उसे सिंह और भालू पर विजय दी।

1 शमूएल 17:37
“यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू के पंजे से बचाया था वही मुझे…”

क्या आप एक आत्मिक पिता के स्तर तक पहुँच चुके हैं?

इसी प्रकार आत्मिक रूप से परिपक्व व्यक्ति अपने जीवन की अनेक घटनाओं में — यहाँ तक कि उद्धार से पहले — परमेश्वर के हाथ को पहचान लेता है और उसकी आवाज़ को सीख जाता है।

3. उद्धार के बाद की यात्रा

उद्धार के बाद, जब तुम परमेश्वर के साथ चलते हो, तो तुम्हें अपने जीवन के हर मौसम में उसकी उपस्थिति पहचानना सीखना होगा — कठिनाई में, कमी में, प्रचुरता में और सफलता में।
उसके मार्गों को सीखो।
उसे “आदि से” जानो, ताकि तुम आत्मिक बच्चे बने न रहो।

आत्मिक पिता बनने के लिए तुम्हें उस परमेश्वर को जानना होगा जो आदि से है — न कि केवल आज की घटनाओं में कार्य करने वाले परमेश्वर को।
बैठो, और अपने जीवन पर ध्यान से विचार करो — एक-एक चरण पर। पवित्रशास्त्र से आरम्भ करो: देखो कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ कैसे चला।
जो उसे आदि से नहीं देख सके, वे शिकायत करते रहे और अन्ततः उसे अस्वीकार कर दिया।
परन्तु जिन्होंने उसे पहचाना, वे बदल दिए गए और उसके प्रेरित बन गए।

क्या आप एक आत्मिक पिता के स्तर तक पहुँच चुके हैं?

आत्मिक पिता बनो।

परमेश्वर तुम्हें आशीष दे।
शलोम।

इस शुभ समाचार को दूसरों के साथ बाँटो।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp